बाणभट्ट - हर्षवर्द्धन का समकालीन था। वह हर्षवर्द्धन का दरबारी कवि था।

रचनायें - 1. हर्षचरित - हर्ष की जीवनी (संस्कृत)

2. कादम्बरी - उपन्यास (संस्कृत) यह अधूरा रह गया था। इसे उसके पुत्र भूषण भट्ट ने पूर्ण किया।

3. पार्वतीपरिणय - उपन्यास

हर्षचरित के आठ अध्याय हैं -

1. लेखक के परिवार पर केन्द्रित

2. लेखक एवं हर्ष के बीच परिचय

3. थानेश्वर का वर्णन

4 से 8 तक - (a) हर्ष के पूर्वजों (b) कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन मौखरी से उसकी बहन राज्यश्री का विवाह, हर्ष के पिता प्रभाकरवर्द्धन की मृत्यु, ग्रहवर्मन की हत्या, मालवा नरेश द्वारा राज्यश्री का अपहरण, मालवा के विरुद्ध अभियान और सफलता, गौड़ के शासक शशांक द्वारा विंध्याचल की ओर पलायन, हर्ष द्वारा शशांक के जीवन की रक्षा.

दोष - (a) इसमें वर्णित घटनाएँ अतिशयोक्तिपूर्ण हैं।

(b) तथ्यों का क्रमश उल्लमिखित नहीं किया गया है।

(c) कल्पना प्रधान है

बाण का उद्देश्य हर्षकालीन इतिहास लिखना नहीं था बल्कि हर्षवर्द्धन द्वारा अपने कुल की प्रतिष्ठा की रक्षा करना और बहन राज्यश्री के गौरव को पुनर्स्थापित करने की प्रक्रिया का उल्लेख करना था

(d) इसमें मिथकीय उद्धरणों को भी अंकित किया गया है।

गुण - (a) कई अन्य समकालीन साहित्यों एवं पुरातात्विक साक्ष्यों से हर्षचरित की कुछ तथ्यों की पुष्टि होती है।

(b) कालक्रम बोध को देखा जा सकता है। काल की निश्चितता के कारण यह रचना भारतीय इतिहास की प्राचीनतम ऐतिहासिक ग्रंथ माना जा सकता है।

(c) समकालीन जीवन का यथार्थपरक चित्रण तथा सतर्क एवं सूक्ष्म प्रेक्षण

(d) सभी वर्गों के कुछ महिलाओं का वर्णन

(e) कृषि कार्य से संबंधित सटीक विवरण। उपजाये जाने वाले अनाजों - चावल, गेहूँ, गन्ना इत्यादि का उल्लेख